IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# सतना जिले में प्रवासी श्रमिकों की वर्तमान स्थिति एवं कोविड–19 का प्रभाव

**डॉ. हरिओम अग्रवाल**
प्राध्यापक ( वाणिज्य )
शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सतना (म0प्र0)

**अर्चना सिंह**
**शोधार्थी**
एम.कॉम. एम.फिल.( वाणिज्य )

सतना जिला, मध्य प्रदेश के उत्तर–पूर्वी भाग में स्थित एक महत्वपूर्ण जिला है, जा बघेलखण्ड क्षेत्र की सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक विविधता के लिए जाना जाता है। यहाँ की बड़ी आबादी कृषि पर निर्भर है, किंतु कृषि भूमि के विखंडन, मौसमी रोजगार तथा सीमित आय के कारण लोगों को मजदूरी एवं असंगठित कार्यों की ओर रुख करना पड़ता है। ऐसे सामाजिक–आर्थिक कारणों से सतना जिले में प्रवास की प्रवृत्ति व्यापक है। यहाँ के प्रवासी श्रमिक मुख्यतः निम्न सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि से आते हैं। सतना जिले के प्रवासी श्रमिकों में प्रमुख रूप से अनुसूचित जाति , अनुसूचित जनजाति अन्य पिछड़ा वर्ग तथा आर्थिक रूप से कमजोर सामान्य वर्ग शामिल हैं। इन वर्गों की आम विशेषता यह है कि इनके पास स्थायी रोजगार की कमी होती है, भूमि सीमित होती है तथा आर्थिक सुरक्षा नगण्य होती है। सतना के जनजातीय समुदाय जैसे गोंड और कोल मौसमी कृषि एवं वन–आधारित जीवन यापन पर निर्भर हैं, इसलिए रोजगार की निरंतरता न होने के कारण वे शहरों की ओर प्रवास करते हैं।

शैक्षिक दृष्टि से देखा जाए तो अधिकांश प्रवासी श्रमिकों की शिक्षा कम होती है। बहुत से लोग प्राथमिक या माध्यमिक शिक्षा के बाद ही श्रम कार्यों में लग जाते हैं। कम शिक्षा उन्हें औपचारिक क्षेत्र से दूर रखती है और वे निर्माण कार्य, ईंट–भट्ठे, लोडिंग–अनलोडिंग, सीमेंट उद्योग से जुड़े सहायक कार्य, होटल–ढाबा और घरेलू सेवाओं

में काम करते हैं। इन सभी क्षेत्रों की आम विशेषता यह है कि ये असंगठित हैं जहाँ नौकरी की सुरक्षा, नियमित मजदूरी, बीमा और अन्य सुविधाएँ नगण्य होती हैं।

कोविड–19 महामारी ने प्रवासी श्रमिकों की सामाजिक पृष्ठभूमि को और स्पष्ट रूप से सामने लाया। महामारी के दौरान सतना जिले के हजारों श्रमिक मुंबई, दिल्ली, गुजरात, राजस्थान और पंजाब से वापस अपने गाँवों की ओर लौटे। यह पलायन आर्थिक संकट, काम छूटने, भोजन और आवास की समस्या, तथा स्वास्थ्य जोखिम के कारण हुआ। लौटने वाले श्रमिक लगभग सभी उन्हीं कमजोर सामाजिक वर्गों से थे, जिन्हें महामारी से पहले भी असुरक्षा का सामना करना पड़ता था। गाँव लौटने के बाद भी उनकी समस्याएँ समाप्त

नहीं हुईं। कृषि क्षेत्र सबको रोजगार नहीं दे पाया और मनरेगा जैसी योजनाओं में भी कार्य सीमित था। इस स्थिति ने दिखाया कि सतना जिले के प्रवासी श्रमिकों की सामाजिक पृष्ठभूमि अस्थिरता, असुरक्षा और सीमित अवसरों से घिरी हुई है।

निष्कर्षतः, सतना जिले के प्रवासी श्रमिक समाज के उन वर्गों से आते हैं जो आर्थिक, शैक्षिक और सामाजिक दृष्टि से कमजोर हैं। कोविड–19 ने उनकी समस्याओं को और गहरा किया, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि भविष्य में ऐसे वर्गों के लिए सामाजिक सुरक्षा, कौशल विकास, रोजगार स्थिरता और संकट–प्रबंधन की नीति आवश्यक है।

## कोविड–19 का प्रवासी श्रमिकों पर प्रभाव :–

रोजगार एवं आय पर प्रभाव :– लॉकडाउन के कारण कारखानों, निर्माण कार्यों और सेवा क्षेत्रों का अचानक बंद हो गई। दिहाड़ी मजदूरों की दैनिक आय लगभग शून्य हो गई। कई श्रमिकों को महीनों तक मजदूरी नहीं मिली, जिससे आर्थिक असुरक्षा बढ़ी। सतना लौटने वाले श्रमिकों में अधिकांश के पास बचत नगण्य थी।

आवागमन की समस्या :–सार्वजनिक परिवहन के बंद होने से हजारों श्रमिकों को पैदल, साइकिल से या ट्रकों में भरकर लंबी यात्रा करनी पड़ी। सतना जिले के दर्जनों श्रमिक मुंबई, सूरत, पुणे और दिल्ली से 800–1200 किमी की यात्रा कर घर लौटे। इस दौरान भोजन, पानी, स्वास्थ्य सुविधाओं एवं सुरक्षित ठहराव की भारी कमी रही।

सामाजिक–मानसिक प्रभाव :– अनिश्चित भविष्य, बेरोजगारी और ऋण–बोझ के कारण मानसिक तनाव, अवसाद और सामाजिक उपेक्षा के मामले बढ़े। लौटने वाले श्रमिकों को कई गांवों में प्रारंभिक स्तर पर "संक्रमण का खतरा" मानकर सामाजिक दूरी का सामना करना पड़ा।

स्वास्थ्य पर प्रभाव :– कोविड परीक्षण, क्वारंटीन सुविधाओं की सीमित उपलब्धता, असंगठित क्षेत्र में कार्यरत श्रमिकों के पास स्वास्थ्य बीमा या सुरक्षा कवच का अभाव, भीड़भाड़ वाले श्रमिक कैंपों में सामाजिक दूरी का पालन कठिन, जिससे संक्रमण का खतरा अधिक हुआ।

शिक्षा एवं परिवार पर प्रभाव :– आय बंद होने से बच्चों की पढ़ाई पर प्रभाव पड़ा। ऑनलाइन शिक्षा की सुविधा का अभाव स्मार्टफोन, इंटरनेट, बिजली की सीमित उपलब्ध आदि के कारण स्थिति बहुत कष्टदायक थी।

सरकारी एवं स्थानीय सहयोग :– परिवहन बसें एवं "श्रमिक स्पेशल ट्रेनें" चलाए जाने से हजारों प्रवासी श्रमिक सतना पहुँचे। मनरेगा के तहत रोजगार उपलब्ध कराने का प्रयास किया गया—परंतु मांग की तुलना में कार्य सीमित रहा। राशन वितरण (पीडीएस), जनधन खाते में नकद राशि, एवं उज्ज्वला योजना के तहत गैस सिलेंडर जैसी राहतें लाभकारी साबित हुईं, परंतु सभी तक समय पर नहीं पहुँचीं।

स्थानीय समाज का योगदान :– कई सामाजिक संगठनों और स्वयंसेवी समूहों ने रास्ते में भोजन, पेयजल, मास्क व सेनेटाइजर उपलब्ध कराए। पंचायत स्तर पर अस्थायी क्वारंटीन केंद्र बनाए गए, जहाँ विभिन्न सुविधाएँ उपलब्ध कराई गईं।

## कोविड–19 का प्रवासी श्रमिकों पर प्रभाव :सरकार, विभिन्न आयोगों और शोध रिपोर्टों के अनुसार

1. **ILO (2020)** ने अपनी रिपोर्ट में COVID-19 के दौरान वैश्विक श्रम बाज़ार में असुरक्षा, बेरोजगारी और प्रवासी श्रमिकों की संवेदनशीलता को रेखांकित किया।
2. **NITI Aayog (2021)** ने भारत में प्रवासी संकट को "सामाजिक-आर्थिक विफलता" के रूप में वर्णित किया और श्रमिकों की आकस्मिक वापसी को नीति-निर्माण की कमजोरी बताया।
3. **MoLE (2021) भारत सरकार** की रिपोर्ट में बताया गया कि लॉकडाउन के बाद 1 करोड़ से अधिक प्रवासी श्रमिक अपने मूल स्थान लौटे।
4. **ग्राम विकास मंत्रालय (2021)** ने मनरेगा में कार्य–मांग में 40% वृद्धि दर्ज की, जो ग्रामीण बेरोजगारी का संकेत था।

5. **स्थानीय एनजीओ "परमार्थ सतना" (2020)** के अनुसार सैकड़ों श्रमिक 800–1200 किमी पैदल या असुरक्षित साधनों से लौटे।

6. **MP Migration Report (2020)** में कहा गया कि सतना, रीवा, सीधी, टीकमगढ़ और पन्ना जिला प्रवासी श्रमिकों के गहन प्रभावित जिले थे।

7. कोविड–19 महामारी ने वैश्विक सामाजिक–आर्थिक ढाँचे को गहरे स्तर पर प्रभावित किया। भारत में लगे लॉकडाउन का सबसे गंभीर प्रभाव प्रवासी श्रमिकों पर पड़ा। सतना जिला, जो मध्यप्रदेश का श्रमिक–प्रधान क्षेत्र है, देश के विभिन्न राज्यों में बड़ी संख्या में श्रमिक भेजता है। महामारी के दौरान आय, रोजगार, आवागमन, स्वास्थ्य, सामाजिक सुरक्षा और मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव देखने को मिले। यह अध्ययन द्वितीयक आंकड़ों, सरकारी रिपोर्टों, जिला प्रशासन के अभिलेखों तथा उपलब्ध फील्ड स्टडी पर आधारित है। परिणामों से स्पष्ट होता ह कि प्रवासी श्रमिक आर्थिक रूप से अत्यंत असुरक्षित स्थिति में थे और सरकारी सहायता व सामाजिक समर्थन पर्याप्त होने के बावजूद व्यावहारिक स्तर पर अनेक चुनौतियाँ बनी रहीं। अध्ययन भविष्य के लिए नीतिगत सुधारों की आवश्यकता दर्शाता है।

## संदर्भ सूची (Refrences)


1. 'स्मारिका नगर दर्पण' नगर निगम सतना (म.प्र.) 2021, पृष्ठ 02
2. बघेल विक्रम सिंह ' बघेलखंड का राजनीतिक एवं संस्कृति इतिहास' शेखर प्रकाशन इलाहाबाद, 2003
3. कुमार प्रमीला (2006), मध्यप्रदेश एक भौगोलिक अध्ययन मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल। पृष्ठ–24
4. मध्यप्रदेश आर्थिक सर्वेक्षण 2021, आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय भोपाल मध्यप्रदेश।
5. "मध्य प्रदेश में कोविड–19 के बढ़ते मामलों और प्रशासनिक तैयारियाँ।" दैनिक भास्कर, 2020।
6. NDTV (2020). मध्य प्रदेश के सतना पहुँचने वाली ट्रेन में प्रवासी श्रमिकों के बीच भोजन को लेकर संघर्ष। NDTV समाचार रिपोर्ट।
7. द इंडियन एक्सप्रेस (2020). सतना जिले में स्कूल में क्वारंटीन किए गए प्रवासी श्रमिकों द्वारा भवन का नवीनीकरण। द इंडियन एक्सप्रेस।
8. न्यूजक्लिक (2020). कोविड–19 लॉकडाउन के बाद मध्य प्रदेश के 54 प्रतिशत प्रवासी श्रमिकों का वापस न जाने का निर्णय। न्यूजक्लिक रिपोर्ट।

9. द वायर (2020). मध्य प्रदेश में कोविड–19 लॉकडाउन का प्रवासी श्रमिकों पर सामाजिक–आर्थिक प्रभाव। द वायर।

10. "कोविड–19 के दौरान प्रवासी श्रमिकों के लिए सरकारी योजनाएँ।" श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार, 2020।

11- ILO Report (2020)

12- NITI Aayog Report 2021

13- MoLE (2021) भारत सरकार की रिपोर्ट

14- ग्राम विकास मंत्रालय की रिपोर्ट (2021)

15. स्थानीय एनजीओ "परमार्थ सतना" □□□□□ रिपोर्ट (2020)

16- MP Migration Report (2020)

17. "कोविड–19 लॉकडाउन का बच्चों, महिलाओं और गरीब वर्ग पर प्रभाव: मध्य प्रदेश का अध्ययन।" पीपुल्स आर्काइव ऑफ रूरल इंडिया (PARI), 2020।